सामाजिक समूह तथा समूह व्यवहार

सामान्यतः समूह का तात्पर्य दो या दो से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं का संग्रह से है। परन्तु सामाजिक शब्दों विज्ञान के दृष्टिकोण से समूह के लिए दो शर्तों का होना आवश्यक है। पहली शर्त यह है कि वह दो या दो से अधिक प्राणियों का समूह हो। दूसरा यह कि उन व्यक्तियों के बीच कार्यात्मक सम्बन्ध (functional relationship) होता है।

Lindgren (1969) ने समूह को परिभाषित करते हुए कहा है – "दो या अधिक व्यक्तियों के किसी कार्यात्मक सम्बन्ध में व्यस्त होने पर एक समूह का निर्माण होता है।"

व्यक्ति की तरह समूह को भी अपने identity होती है। जिसकी निश्चित विशेषताएं होती है, जिसका निरीक्षण तथा मापन किया जा सकता है और जिनके सम्बन्ध में भविष्यवाणी की जा सकती है। जब समूह का निर्माण हो जाता है तो इसके साथ ही एक विशेष संरचना विकसित हो जाती है समूह के सदस्यों की भूमिकाएं निर्धारित हो जाती है। और सभी सदस्य अपने अधिकार तथा कर्तव्य के आलोक में एक दूसरे के साथ पारस्परिक क्रिया करते है। जिसका उद्देश्य किसी समान लक्ष्य की प्राप्ति होता है। इस प्रकार समूह एक सामाजिक इकाई का रूप धारण कर लेता है।

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

समूह का वर्गीकरण
Classification of Group

कूले (Cooley 1909) महोदय ने समूह को दो भागों में बाँटा है।
Personal involvement के आधार पर
① Primary Group - प्राथमिक समूह
② Secondary Group - द्वितीयक समूह

① Primary Group → प्राथमिक समूह उसे कहते है जिसमें सदस्य के बीच, आमने सामने का सम्बन्ध रहता है। उनके बीच घनिष्ठ पारस्परिक सम्बन्ध होता है। परिवार प्राथमिक समूह का एक सुन्दर उदाहरण है।

प्राथमिक समूह की विशेषताएं

① प्राथमिक समूह का आकार प्रायः छोटा होता है इसी कारण सदस्यों के बीच आमने सामने का सम्बन्ध रहता है

② प्राथमिक समूह में सदस्यों के बीच वैयक्तिक सम्बन्ध अधिक पाया जाता है

③ प्राथमिक समूह में स्थाई होता है

④ प्राथमिक समूह में हम की भावना (We feeling) पाई जाती है,

⑤ प्राथमिक समूह में सदस्यों के बीच सम्बन्ध में स्वभाविकता पाई जाती है।

⑥ प्राथमिक समूह का (morale) मनोबल काफी ऊंचा होता है।

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

(7) Cooley महोदय के अनुसार प्राथमिक समूह की एक प्रधान विशेषता होती है व्यक्तियों के सामाजिक स्वभाव, आदर्शों, वैयक्तिक मूल्य तंत्र Personal value System आदि के निर्माण में इसका महत्वपूर्ण योगदान है।

(2) द्वितीय समूह की विशेषताऐं

द्वितीय समूह से तात्पर्य ऐसे समूह से है जिसमें सदस्यों के बीच औपचारिक सम्बन्ध अधिक होता है। तथा वैयक्तिक सम्बन्ध कम रहता है।

(1) Secondary group औपचारिक होता है। इसके सदस्यों के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं रहता है।

(2) इस प्रकार के समूह का आकार बड़ा होता है इसी कारण इसके सदस्यों के बीच आमने-सामने का सम्बन्ध नहीं होता है।

(3) इस प्रकार के समूह में I. feeling होती है। we-feeling कम होती है।

(4) इस समूह के सदस्यों के बीच पारस्परिक सम्बंध कम होता है। formal सम्बन्ध रहता है

(5) इस समूह में समूह का मनोबल प्रायः नीचा होता है।

(6) यह समूह अधिकतर अस्थाई होता है।